6.3 भट्टिनी का चरित्र-चित्रण

बाणभट्ट की आत्मकथा में यद्यपि कई नारी पात्र हैं, यथा–भट्टिनी, निपुणिका, महामाया, सुचरिता आदि तथापि इनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नारी पात्र भट्टिनी है। भट्टिनी देवपुत्र तुवरमिलिंद की अत्यंत रूपवती कन्या है। जिसका बलात् अपहरण कर लिया गया है। छोटा राजकुल से उसकी मुक्ति बाणभट्ट, निपुणिका एवं कुमार कृष्णवर्द्धन के सहयोग से ही संभव हो सकी।

भट्टिनी के सौंदर्य से हर कोई अभिभूत है। बाणभट्ट तो भट्टिनी को देखकर आश्चर्यचकित हो जाता है और उसके मुख से ये शब्द निकलते हैं–**"इतनी पवित्र रूप राशि किस प्रकार इस कलुष धरित्री में संभव हुई।"** भट्टिनी महावराह की आराधिका है। उसका व्यक्तित्व अप्रतिम सौंदर्य से मंडित है और स्वभाव शांत है। भट्ट को वह अपना अभिभावक मानती है और उसका बहुत सम्मान करती है। उसके आचरण में एक स्वाभाविक गंभीरता एवं औदात्य का समावेश है। वह संतुलित वाणी में अपना मंतव्य व्यक्त करती है। उसके हृदय में किसी के प्रति ईर्ष्या-द्वेष नहीं है। वंदिनी भट्टिनी कातर स्वर में महावराह से अपने उद्धार की प्रार्थना करती है। स्वभाव से गंभीर एवं वाणी से कोमल भट्टिनी नारी जाति का भूषण है। बाणभट्ट तो उसे साक्षात् देवी ही मानता है। वह कहता है–**"मैं अकिंचन हूँ, साधनहीन हूँ, पथभ्रांत हूँ। मेरे पास है ही क्या, जिससे तुम्हारी पूजा करूँ? तुम देवी हो, सौ बार प्रतिवाद करो, तो भी देवी हो–इस कलुष-पंकिल संसार-सागर की प्रफुल्ल पद्मिनी, इस धूलि धूसर वन भूमि की मालती लता।"**

उदाहरण–भट्टिनी को नगरहार से पुरुषपुर, पुरुषपुर से जालंधर और फिर न जाने कहाँ-कहाँ दस्युओं के साथ घूमना पड़ा और अंत में स्थाणीश्वर के छोटे राजकुल में वह लाई गई। दस्युओं के स्पर्श से उसका अहंभाव

Scanned by CamScanner

एवं अभिमान चूर-चूर हो चुका था। अब वह अपने को देवपुत्र तुवरमिलिंद की पुत्री होने के कारण विशिष्ट नारी न मानकर एक सामान्य नारी मानने लगी है। परिस्थिति के अनुसार स्वयं को ढालने का यह एक अच्छा उदाहरण है।

भट्टिनी अपने को घर्षिता, अपमानिता, कलंकिनी स्त्री मानती है, किंतु बाणभट्ट उसे कलंकिनी नहीं मानता। वह उसे आश्वस्त करता हुआ कहता है–**"देवी, पावक को कभी कलंक स्पर्श नहीं करता, दीपशिखा को अंधकार की कालिमा नहीं लगती....जाह्नवी की वारिधारा को धरती का कलुष स्पर्श नहीं करता। देवी! स्यारों के स्पर्श से सिंह किशोरी कलुषित नहीं होती। असुरों के गृह में जाने से लक्ष्मी घर्षिता नहीं होती। चींटियों के स्पर्श से कामधेनु अपमानित नहीं होती। चरित्रहीनों के बीच वास करने से सरस्वती कलंकित नहीं होती।"**

बाण के इन आश्वासनकारी वचनों ने भट्टिनी का मुख प्रभातकालीन नवमल्लिका की भांति खिला दिया। वह बाणभट्ट की प्रशंसा करती हुई कहने लगी–**"तुम सच्चे कवि हो। मेरी बात गाँठ बाँध लो तुम इस आर्यावर्त के द्वितीय कालिदास हो।"**

महावराह की आराधना में लीन रहने वाली भट्टिनी भक्ति कातर स्वर में महावाराह की स्तुति करती है। भक्ति के इस संबल ने उसे संकल्प शक्ति एवं दृढ़ता प्रदान की है। अपने इन गुणों के कारण वह नारी जाति की भूषण बन गई है। बाणभट्ट भट्टिनी की सेवा करके अपने को धन्य समझता है–**"मैं बड़ा भागी हूँ जो इस महिमाशालिनी राजबाला की सेवा का अवसर पा सका।"** भट्टिनी के स्वभाव में मूल्यांकन एवं विश्लेषण की अपूर्व क्षमता है। बाणभट्ट ने उसके पाप बोध एवं अपराध बोध को दूर करते हुए उसके व्यक्तित्व का जो महिमामंडन किया उससे उसे बड़ी शांति मिली। अपने भावों का परिचय देती हुई वह कहती है–**"जिस दिन भट्ट ने मुझसे प्रथम वाक्य कहा था, उस दिन मेरा नवीन जन्म हुआ था। मैंने उस दिन अपनी सार्थकता को प्रथम बार अनुभव किया। उनकी कोमल मधुर वाणी में अद्भुत मिठास था।.....मैंने प्रथम बार अनुभव किया कि मेरे भीतर एक देवता है जो आराधक के अभाव में मुरझाया हुआ छिपा बैठा है।"**

वह परिस्थितियों के अनुकूल स्वयं को ढाल लेने में कुशल है। उसके चरित्र में आत्मगौरव, भक्तिभावना, आराध्य में निष्ठा, हृदय की निष्कपटता और पवित्र भाव विद्यमान हैं। बाणभट्ट से वह मन ही मन प्रेम करती है, किंतु इस प्रेम को व्यक्त नहीं कर पाती। इसीलिए इसे द्विवेदी जी अदृप्त प्रेम कहते हैं।

भट्टिनी के चरित्रांकन के लिए द्विवेदी जी ने दोनों विधियों का उपयोग किया है। कहीं-कहीं वे प्रत्यक्ष विधि से उसके चारित्रिक गुणों को उजागर करते हैं तो कहीं परोक्ष विधि से उसके चरित्र पर प्रकाश डालते हैं। भट्टिनी स्वयं अपने बारे में अभिभाषण करती है वह भी उसके चरित्र का उद्घाटन करने वाला है। बाणभट्ट तो भट्टिनी से इतना अभिभूत है कि वह उसे पवित्र देवी एवं स्वयं को उनका सेवक ही मानता है। लोरिकदेव से वह स्पष्ट कहता है–**"मैं भट्टिनी का विनीत सेवक हूँ। उनकी आज्ञा थी कि मैं किसी को उनका यथार्थ परिचय न बताऊँ। मैंने कान्यकुब्ज नरेश को भी उनका कोई परिचय नहीं दिया। उन्हें कुमार कृष्णवर्द्धन से मालूम हुआ।"**

भट्टिनी का सौंदर्य अत्यंत आकर्षक एवं विस्मय विमुग्धकारी था। इस सौंदर्य का वर्णन बाणभट्ट इन शब्दों में करता है–**"उस समय उनकी शोभा देखते ही बनती थी। अत्यंत विस्तृत चिकुर राशि के भीतर वह आर्द्रार्द्र मुखमंडल शैवाल जाल से घिरे हुए सीकर सिक्त प्रफुल्ल शतदल के समान मनोहर लगता था, किंतु कातरता के कारण शिथिल बनी हुई भ्रूलताएँ मनोजन्मा देवता के भग्नचाप की भांति भीषण-मनोहर शोभा विस्तार कर रही थीं।"**

बाणभट्ट ने भट्टिनी की स्तुतियाँ अनेक स्थलों पर की हैं। भट्टिनी बाण से यह आग्रह करती है कि वह अपने काव्य से मानव की वृत्तियों को उच्चतर कार्य में नियोजित करे–**"भट्ट मैं तुम्हारी काव्य-संपद पाकर शक्ति पा जाऊँगी। तुम मेरी विनती स्वीकार करो।"**

बाणभट्ट उसकी इस प्रार्थना को सुनकर अभिभूत हो उठता है। वह भट्टिनी को गंगा के समान पवित्र मानता हुआ कहता है–**"जिस कुल ने इस देव दुर्लभ सौंदर्य को, इस ऋषि दुर्गम सत्य को, इस कुसुम कमनीय चारुता**

Scanned by CamScanner

को उत्पन्न किया है, वह धन्य है। वह कुल पवित्र है, वह जननी कृतार्थ है, वह पिता सफलकाय है। देवी! तुममें निश्चय ही वह शक्ति है जिससे म्लेच्छ जाति का हृदय संवेदनशील बनेगा, उनमें उच्चतर साधना का संचार होगा, वे सम्मानित भूमि का सम्मान सीखेंगे।"

भट्टिनी बाण से उपकृत हुई है। वह उसकी कृतज्ञता ज्ञापित करती हुई कहती है–**"भट्ट तुम्हारी इस पवित्र वाक्स्त्रोतस्विनी में स्नान करके ही मैं पवित्र हुई हूँ। इसी से मुझमें आत्मबल आया है। तुम्हारे निष्कलुष हृदय को देखकर ही मुझे सेवा का प्रशस्त पथ दिखा है।"**

नोट्स

निपुणिका महाराज हर्ष द्वारा रचित रत्नावली नाटिका में वासवदत्ता की भूमिका करते हुए जब वास्तव में स्वर्ग सिधार गई तब भट्टिनी करुणा विगलित होकर मूर्च्छित हो गई। अंत में वह भट्ट के साथ म्लेच्छों का हृदय परिवर्तन करने के लिए तत्पर हो गई, पर जा नहीं सकी क्योंकि आचार्य भर्वुपाद ने बाणभट्ट को पुरुषपुर जाने की आज्ञा दे दी और भट्टिनी को तब तक स्थाणीश्वर में रुकने के लिए कहा।

बाणभट्ट की आत्मकथा में चित्रित भट्टिनी निश्चय ही एक प्रभावशाली चरित्र है जिसकी संकल्पना आचार्य द्विवेदी जी ने इतिहास और कल्पना के समन्वय से इस भव्य रूप में की है कि वह एक अमर चरित्र बन गई है।

Scanned by CamScanner